<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

नागालैंड के 22 छात्र पहुंचे सांची विश्वविद्यालय

- **एक दूसरे से साझा की संस्कृति और आचार-विचार**
- **शिक्षा, कला और मौसम पर भी हुई बातचीत**
- **सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को नागालैंड आमंत्रित किया**
- **प्रधानमंत्री के *एक भारत-श्रेष्ठ भारत* कार्यक्रम के तहत म.प्र की पहल**

नागालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा। इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मुलाकातें कीं और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने एक दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की। नागालैंड के छात्रों ने भी सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने प्रदेश में आमंत्रित किया।

दरअसल, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की "**एक भारत श्रेष्ठ भारत**" पहल के तहत देश के विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से कई राज्यों को एक साथ जोड़ा गया है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश का समन्वय उत्तर पूर्वी राज्यों मणिपुर और नागालैंड से स्थापित किया गया है। आपसी संपर्क बढ़ाने और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने के उद्देश्य से तीनों राज्य आपस में पर्यटन, तकनीकी, आयुष, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक दूसरे के विचार साझा करेंगे। मध्य प्रदेश शासन ने उच्च शिक्षा विभाग को इस कार्यक्रम के विनिमय के लिए नोडल संस्था नियुक्त किया है।

रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में पहुंचे नागालैंड के छात्रों के दल ने सांची विश्वविद्यालय के छात्रों एवं प्राध्यापकों से विभिन्न पाठ्यक्रमों, चयन प्रक्रिया, छात्रवृत्ति इत्यादि के संबंध में जानकारियां ली। नागा छात्रों का यह दल मध्य प्रदेश के विभिन्न एतिहासिक स्थलों का भी भ्रमण कर रहा है। प्रधानमंत्री के "एक भारत श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम के तहत मध्य प्रदेश से पर्यटन, तकनीक, आयुष, मेडिकल, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न दल नागालैंड और मणिपुर जाएंगे। नागालैंड के छात्रों के दल की ही तरह मणिपुर के छात्रों का दल भी मध्य प्रदेश आएगा।

BHOPAL, TUESDAY, 13/02/2018 . 16 city भास्कर

स्टूडेंट्स ने साझा की एक-दूसरे की संस्कृति

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

नगालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल सोमवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा। इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मुलाकात की और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने एक-दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की।

नगालैंड के छात्रों ने भी सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने प्रदेश में आमंत्रित किया। नगा छात्रों का यह दल मध्यप्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों का भी भ्रमण कर रहा है। प्रधानमंत्री के एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत मध्य प्रदेश से पर्यटन, तकनीक, आयुष, मेडिकल, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न दल नगालैंड और मणिपुर जाएंगे।

पत्रिका PLUS .16 Bhopal . Tuesday . 13/02/2018

युवाओं ने जानी मप्र की संस्कृति

भोपाल • यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत नगालैंड के महाविद्यालयों के 22 छात्रों का दल सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा। इन छात्रों ने विवि के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर छात्रों के साथ मुलाकातें कीं और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने

एक दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की।

राज एक्सप्रेस
मंगलवार, 13 फरवरी, 2018
www.rajexpress.in
8
भोपाल

एक्सप्रेस न्यूज

रायसेन : नगालैंड के 22 छात्र पहुंचे सांची विश्वविद्यालय, किया अवलोकन

रायसेन। जिले में स्थित सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में नागालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल पहुंचा। इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मुलाकातें की और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने एक दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की। नगालैंड के छात्रों ने भी सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने प्रदेश में आमंत्रित किया। आधिकारिक जानकारी के अनुसार दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत देश के विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से कई राज्यों को एक साथ जोड़ा गया है। आपसी संपर्क बढ़ाने और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से तीनों राज्य आपस में पर्यटन, तकनीकी, आयुष, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक दूसरे के विचार साझा करेंगे।

बाइस छात्रों के दल ने नगा संस्कृति से रूबरू कराया

शिक्षा से लेकर कला और मौसम पर भी हुई बातचीत

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. नागालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा। इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर छात्रों से मुलाकात की और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने एक-दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की। नागालैंड के छात्रों ने भी सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने प्रदेश में आमंत्रित किया।

छात्रों ने कक्षाओं में पहुंचकर छात्रों से मुलाकात की और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

दरअसलए प्रधानमंत्री की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत देश के विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से कई राज्यों को एक साथ जोड़ा गया है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश का समन्वय उत्तर पूर्वी राज्यों मणिपुर और नागालैंड से स्थापित किया गया है।

आपसी संपर्क बढ़ाने और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से तीनों राज्य आपस में पर्यटन, तकनीकी, आयुष, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक-दूसरे के विचार साझा करेंगे। मध्य प्रदेश शासन ने उच्च शिक्षा विभाग को इस कार्यक्रम के लिए नोडल संस्था नियुक्त किया है। अगले दिनों में मणिपुर के छात्रों का दल भी सांची विश्वविद्यालय पहुंचेगा।

पत्रिका Tue, 13 February 2018
epaper.patrika.com//c/26214374

रायसेन भास्कर

भोपाल, मंगलवार 13 फरवरी, 2018 फाल्गुन कृष्ण पक्ष-13, 2074

नागालैंड के छात्रों ने समझी मप्र की संस्कृति

प्रधानमंत्री के एक भारत, श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत मप्र की पहल

भास्कर संवाददाता | रायसेन

नागालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा। इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मुलाकातें कीं और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन छात्रों ने एक-दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, आचार-व्यवहार, कला, शिक्षा, मौसम जैसे विषयों पर बातचीत की। नागालैंड के छात्रों ने भी सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को अपने प्रदेश में आमंत्रित किया।

दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत देश के विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से कई राज्यों को एक साथ जोड़ा गया है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश का समन्वय उत्तर पूर्वी राज्यों मणिपुर और नागालैंड से स्थापित किया गया है। आपसी संपर्क बढ़ाने और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से तीनों राज्य आपस में पर्यटन, तकनीकी, आयुष, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक दूसरे के विचार साझा करेंगे। मध्य प्रदेश शासन ने उच्च शिक्षा विभाग को इस कार्यक्रम के विनिमय के लिए नोडल संस्था नियुक्त किया है।

नागालैंड के छात्रों ने जुटाई कई जानकारी

रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में पहुंचे नगालैंड के छात्रों के दल ने सांची विश्वविद्यालय के छात्रों एवं प्राध्यापकों से विभिन्न पाठ्यक्रमों, चयन प्रक्रिया, छात्रवृति इत्यादि के संबंध में जानकारियां लीं। नगालैंड के छात्रों का यह दल मध्य प्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों का भी भ्रमण कर रहा है। प्रधानमंत्री के एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत मप्र से पर्यटन, तकनीक, आयुष, मेडिकल, पुलिस और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न दल नगालैंड और मणिपुर जाएंगे। नगालैंड की तरह मणिपुर के छात्रों का दल भी मध्य प्रदेश आएगा।

रायसेन राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, मंगलवार, 13 फरवरी 2018

नागालैंड के 22 छात्र पहुंचे सांची विश्वविद्यालय

रायसेन, 12 फरवरी। नागालैंड के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 22 छात्रों का एक दल सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय पहुंचा।

इन छात्रों ने विश्वविद्यालय के प्राकृतिक वातावरण के अलावा विभिन्न कक्षाओं में पहुंचकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मुलाकातें कीं और शिक्षा संबंधी विषयों पर विचारों का आदान.प्रदान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत देश के विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सामंजस्य बढ़ाने के उद्देश्य से कई राज्यों को एक साथ जोड़ा गया है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश का समन्वय उत्तर पूर्वी राज्यों मणिपुर और नागालैंड से स्थापित किया गया है। रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में पहुंचे नागालैंड के छात्रों के दल ने सांची विश्वविद्यालय के छात्रों एवं प्राध्यापकों से विभिन्न पाठ्यक्रमों, चयन प्रक्रिया, छात्रवृत्ति इत्यादि के संबंध में जानकारियां ली।

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

रूस में बौद्ध दर्शन का असर, सांची विवि में डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन

- **"रुस में बौद्ध धर्म और भारत को लेकर उत्साह, रुस में 15 लाख बौद्ध"**
- **"लियो टॉल्सटॉय के लेखन में भी था बौद्ध दर्शन का असर "**
- **"कई विपश्यना मेडिटेशन सेंटर हैं रूस में"**

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में रूस में बौद्ध दर्शन के असर और फैलाव पर रुस में पत्रकार रहे श्री अजय कमलाकर की डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। डॉक्यूमेंट्री के बाद अजय कमलाकर ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के करीब 15 लाख लोग मुख्यत: बसते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीन, मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था। डॉ कमलाकर ने अपनी बनाई हुई इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस मे यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यत: महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं।

श्री अजय के अनुसार रूस में कम्यूनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी। लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गईं और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म की प्रेक्टिस कर सकता है। उनका कहना है रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। उन्होने सांची विवि और रुस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही।

डॉक्यूमेंट्री और बौद्ध दर्शन पर आधारित कई सारे प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि रूस के विश्वविख्यात लेखक लियो टॉलस्टॉय के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का काफी गहराई से अध्ययन किया था और उसकी शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल किया था।

विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच श्री कमलाकर ने बताया कि रूस के ज़ार निकोलस द्वितीय के शासन के दौरान बौद्ध भिक्षुओं को विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान आमंत्रित किया जाने लगा था। उनका कहना था कि ज़ार निकोलस ने 1927 में समाधि भी ली थी। 2002 में उसकी समाधि को जब खोदा गया तो अध्ययन करने वाले डॉक्टरों का कहना था कि ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो 24 घंटे पहले ही इस शख्स की मौत हुई हो।

सांची विश्वविद्यालय में छात्रों की जिज्ञासाओं का जवाब देने वाले श्री अजय कमलाकर लेखक एवं पत्रकार हैं। 2003-2007 के दौरान रूस की एक पत्रिका "रशिया बियॉन्ड द हेडलाइंस" के संपादक रहे। उन्होंने 2011-2017 के दौरान टाइम्स ग्रुप के समाचार पत्र सखालिन टाइम्स का संपादन भी किया। डॉ अजय रूस, श्रीलंका और स्वीडन में बौद्ध दर्शन, हिंदुत्व, व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों पर विशेषज्ञता रखते हैं। पिछले दिनों उनकी किताब Globetrotting for Love and Other Stories from Sakhalin Island भी प्रकाशित हुई है।

पत्रिका CITY LIVE Weekend .14 Bhopal Saturday 17/02/2018

बौद्ध धर्म और भारत को लेकर रूस में है उत्साह, वहां 15 लाख बौद्ध

भोपाल ● सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में रूस में बौद्ध दर्शन के असर और फैलाव पर रुस में पत्रकार रहे अजय कमलाकर की डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। डॉक्यूमेंट्री के बाद अजय कमलाकर ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के मुख्यतः करीब 15 लाख लोग बसते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीन, मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था। डॉ. कमलाकर ने इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस मे यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यतः महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं। अजय के अनुसार रूस में कम्युनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी। लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गईं और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म की प्रैक्टिस कर सकता है। उनका कहना है रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। उन्होंने सांची विवि और रुस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही।

रायसेन भास्कर
भोपाल, शनिवार 17 फरवरी, 2018 फाल्गुन शुक्ल पक्ष-2, 2074

जागरूकता | सांची विवि में डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन कर बताया रूस में रहते हैं 15 लाख बौद्ध

डॉक्यूमेंट्री से बताया रूस में बौद्ध दर्शन का असर

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में रूस में बौद्ध दर्शन के असर और फैलाव पर रूस में डॉ. अजय कमलाकर की डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। इस डॉक्यूमेंट्री के बारे उन्होंने ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के करीब 15 लाख लोग रहते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीन, मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था। डॉ. कमलाकर ने अपनी बनाई हुई इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस मे यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यतः महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं।

अजय के अनुसार रूस में कम्युनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी, लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गईं और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म की प्रैक्टिस कर सकता है। उनका कहना है कि रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। उन्होंने सांची विवि और रुस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही।

डॉक्यूमेंट्री को लेकर छात्रों के प्रश्नों का दिया जवाब

डॉक्यूमेंट्री और बौद्ध दर्शन पर आधारित कई सारे प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि रूस के विश्वविख्यात लेखक लियो टॉलस्टॉय के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का काफी गहराई से अध्ययन किया था और उसकी शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल किया था। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच कमलाकर ने बताया कि रूस के जार निकोलस द्वितीय के शासन के दौरान बौद्ध भिक्षुओं को विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान आमंत्रित किया जाने लगा था। उनका कहना था कि जार निकोलस ने 1927 में समाधि भी ली थी। 2002 में उसकी समाधि को जब खोदा गया तो अध्ययन करने वाले डॉक्टरों का कहना था कि ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो 24 घंटे पहले ही इस शख्स की मौत हुई हो।

रूस में पत्रकार रहे अजय कमलाकर से छात्रों ने पूछे सवाल

सांची विवि और रूस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित होना जरूरी

बारला स्थित सांची विश्वविद्यालय में गुरूवार को रूस में पत्रकार रहे अजय कमलाकर की डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। यह डॉक्यूमेंट्री रूस में बौद्ध दर्शन के असर और फैलाव को लेकर बनाई गई थी। डाक्यूमेंट्री के प्रदर्शन के पश्चात कार्यक्रम में मौजूद पत्रकार अजय कमलाकर सांची विश्वविद्यालय के छात्रों से रुबरू हुए। तथा उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।

सांची विवि में डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन

जागरण, रायसेन

श्री कमलाकर ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के करीब 15 लाख लोग मुख्यतः बसते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीन, मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था। डॉ. कमलाकर ने अपनी बनाई हुई इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस में यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यतः महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं। उन्होने सांची विवि और रुस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही।

श्री कमलाकर के अनुसार रूस में कम्यूनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी। लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गईं और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म की प्रेक्टिस कर सकता है। उनका कहना है रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। डॉक्यूमेंट्री और बौद्ध दर्शन पर आधारित कई सारे प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि रूस के विश्वविख्यात लेखक लियो टॉलस्टॉय के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का काफी गहराई से अध्ययन किया था और उसकी शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल किया था। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच श्री कमलाकर ने बताया कि रूस के ज़ार निकोलस द्वितीय के शासन के दौरान बौद्ध भिक्षुओं को विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान आमंत्रित किया जाने लगा था। उनका कहना था कि ज़ार निकोलस ने 1927 में समाधि भी ली थी। 2002 में उसकी समाधि को जब खोदा गया तो अध्ययन करने वाले डॉक्टरों का कहना था कि ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो 24 घंटे पहले ही इस शख्स की मौत हुई हो।

लेखक एवं पत्रकार हैं कमलाकर

सांची विश्वविद्यालय में छात्रों की जिज्ञासाओं का जवाब देने वाले श्री अजय कमलाकर लेखक एवं पत्रकार हैं। 2003-2007 के दौरान रूस की एक पत्रिका शिया बियॉन्ड द हेडलाइंस के संपादक रहे। उन्होंने 2011-2017 के दौरान टाइम्स ग्रुप के समाचार पत्र सखालिन टाइम्स का संपादन भी किया। डॉ. अजय रूस, श्रीलंका और स्वीडन में बौद्ध दर्शन, हिंदुत्व, व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों पर विशेषज्ञता रखते हैं। पिछले दिनों उनकी किताब भी प्रकाशित हुई है।

रायसेन पत्रिका
raisen patrika
शनिवार, 17 फरवरी 2018

दी जानकारी...

रूस में 15 लाख लोग मानते हैं बौद्ध धर्म

लियो टॉल्सटॉय के लेखन में भी था बौद्ध दर्शन का असर

सांची. बौद्ध दर्शन और उससे संबंधित कई सवाल छात्रों ने किए।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सांची. बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय रूस में बौद्ध दर्शन के असर और उसके फैलाव पर रुस में पत्रकार रहे अजय कमलाकर की एक डॉक्यूमेंट्री शुक्रवार को प्रदर्शित की गई। डॉक्यूमेंट्री के बाद कमलाकर ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के करीब 15 लाख लोग मुख्यतः बसते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीन, मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था। डॉ. कमलाकर ने अपनी इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस मे यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यतः महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं।

अजय के अनुसार रूस में कम्यूनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी, लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गई और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म अपना सकता है। उनका कहना है रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। उन्होंने सांची विवि और रूस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही। डॉक्यूमेंट्री और बौद्ध दर्शन पर आधारित कई प्रश्नों के जवाब दिए। उन्होंने बताया कि रूस के विश्वविख्यात लेखक लियो टॉलस्टॉय के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का काफी गहराई से अध्ययन किया था और उसकी शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल किया था।

रूस में बौद्ध दर्शन का असर, सांची विवि में डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन

रायसेन, 16 फरवरी। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में रूस में बौद्ध दर्शन के असर और फैलाव पर रुस में पत्रकार रहे अजय कमलाकर की डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। डॉक्यूमेंट्री के बाद अजय कमलाकर ने बताया कि रूस के तीन इलाकों में बौद्ध धर्म के करीब 15 लाख लोग मुख्यत बसते हैं। बौद्ध धर्म भारत, चीनए मंगोलिया, सेंट्रल एशिया होते हुए रूस पहुंचा था।

रूस में बौद्ध धर्म और भारत को लेकर उत्साह, रुस में 15 लाख बौद्ध

डॉ कमलाकर ने अपनी बनाई हुई इस छोटी सी डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया है कि कैसे इन इलाकों को देखने पर यह महसूस ही नहीं होता कि रूस में भी हिमालय और तिब्बत जैसा इलाका है। रूस मे यूरीयाटिया, ट्यूबा और कलानीसिया के स्वायत्त क्षेत्रों में मुख्यत महायान बौद्ध धर्म के मानने वाले रहते हैं। अजय के अनुसार रूस में कम्यूनिस्ट शासन में किसी भी धर्म को मानने पर पाबंदी थी। लेकिन 1950 के बाद से ही रूस में धर्म पर लगाई गई पाबंदियां हटाई गईं और हर एक धर्म का मानने वाला पूरी आजादी से अपने धर्म की प्रेक्टिस कर सकता है। उनका कहना है रूस में कई सारे विपश्यना मेडिटेशन सेंटर खुल गए हैं जो कि लोगों को ध्यान करना सिखाते हैं। उन्होने सांची विवि और रुस के बौद्ध संस्थानों के बीच संबंध विकसित करने में सहयोग की भी बात कही। डॉक्यूमेंट्री और बौद्ध दर्शन पर आधारित कई सारे प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि रूस के विश्वविख्यात लेखक लियो टॉलस्टॉय के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का काफी गहराई से अध्ययन किया था और उसकी शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल किया था। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच श्री कमलाकर ने बताया कि रूस के ज़ार निकोलस द्वितीय के शासन के दौरान बौद्ध भिक्षुओं को विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान आमंत्रित किया जाने लगा था।

ITBP men to learn Chinese in Sanchi University

By OUR STAFF REPORTER | Jun 30, 2016 12:05 am

FOLLOW US:

BHOPAL : The officers and Jawaans of Indo -Tibetan Border Police (ITBP) will pursue course in Chinese language at Sanchi University for Buddhist -Indic Studies. Four officers have been nominated by ITBP to for Chinese language course, starting from July 2016 . These officers belong to inspector and sub -inspector rank. These officers will learn Chinese during the one -year, two semester course.

There are 20 seats in this course offered by the University and the last date to take admission is June 30. The course fee is Rs 2000 per semester.

The Indian EXPRESS

ITBP men to learn Chinese to enhance security man agement skills

Sanchi University of Buddhist-Indic Studies' registrar Rajesh Gupta, feels the step would be helpful for the ITBP, which has to deal with the Chinese-speaking people along the Sino-India border.

By: **PTI** | Bhopal | Updated: February 25, 2018 1:04 pm

Two ITBP inspectors and as many jawans have already completed the course and are currently posted at the borders.

When it comes to security of the country's borders, the Indo-Tibetan Border Police (ITBP) wants to leave no stone unturned and has now geared up to even break the language barrier with their Chinese counterparts. With this aim, around 25 jawans and officials of the ITBP will take up a one-year certificate course in the Chinese language at the Sanchi University of Buddhist-Indic Studies in Madhya Pradesh's Raisen district.

The university's registrar, Rajesh Gupta, feels the step would be helpful for the ITBP, which has to deal with the Chinese-speaking people along the Sino-India border. Two ITBP inspectors and as many jawans have already completed the course and are currently posted at the borders.

Now, more personnel of the force have been inspired to learn the Chinese language at the university, which is located around 12 kms from the UNESCO world heritage site of the Sanchi Stupa – the hemispherical brick structure built over the relics of Buddha. "In the academic session 2016-17, four ITBP personnel had completed the one-year certificate course in the Chinese language. Subsequently, they have been performing their duties at the borders," Gupta told PTI.

Inspired by the skills developed in the foreign language by the first batch, now 25 more ITBP jawans and officials have enrolled for the certificate course, he said. "We have got the list of the personnel who will take up the course in the university from July," Gupta said.

"Our course is designed as per the needs of the ITBP. Besides learning the Chinese language, the course also provides them an insight into the Buddhism religion," he said. He said this will help the ITBP personnel in communicating with the followers of Buddhism residing in the Sino-India border region.

The course books are in three languages – Hindi, English and Chinese – so that students can understand and grasp the text easily. “We have used pictures and same sentences in three languages to make them understand the Chinese language easily. There are several villages along the border in Himachal Pradesh, Uttarakhand and Jammu and Kashmir where the Chinese-speaking followers of Buddhism live,” he said.

The university, founded in 2012, started the Chinese language certificate course from the 2016-17 academic session. In the 2017-18 academic session, the institution has also started a diploma course for those who have already completed the certificate course.

“We will soon start an advance course in the Chinese language,” Gupta said, claiming that the university is the only institution in Central India where the Chinese language is being taught to the ITBP personnel. The Jawaharlal NehruUniversity (JNU) in New Delhi and the Tezpur University in Assam also have courses in the Chinese language for the ITBP jawans and officials, he added.
For all the latest India News, download Indian Express App

खास खबर .com
हर खबर खास खबर

सांची विवि में ITBP के जवान सीखेंगे चीनी भाषा

khaskhabar.com : गुरुवार, 30 जून 2016 1:05 PM

भोपाल। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के अधिकारी और जवान चीनी भाषा सीखने आएंगे। विश्वविद्यालय की ओर से बुधवार को दी गई जानकारी में कहा गया है कि चीनी भाषा के साथ ही वहां की संस्कृति और लोक व्यवहार पर आधारित प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम में रुचि दिखाते हुए भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल के मुख्यालय से चार अधिकारियों के नामांकन का अनुरोध सांची विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है।

बयान में कहा गया है कि 18वीं बटालियन, 48वीं बटालियन और 49वीं बटालियन के ये अधिकारी अगले एक वर्ष तक विश्वविद्यालय में रहकर चीनी भाषा सीखेंगे। इस प्रकार विश्वविद्यालय सामरिक रूप से अहम चीनी भाषा के क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल भारत-चीन सीमा की रक्षा का जिम्मा निभाता है। आईटीबीपी के जवान देश की उत्तरी सीमा पर लद्दाख के काराकोरम दर्रे से अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न चौकियों और सीमाओं पर तैनात होते हैं। यह दूरी तकरीबन 3488 किलोमीटर लंबी होती है और बेहद विपरीत परिस्थितियों में यह जवान देश की सीमा की सुरक्षा करते हैं। चीन की सीमा से लगे गांवों में बोली जाने वाली भाषा का ज्ञान इनके लिए बेहद सहायक साबित होता है।

विश्वविद्यालय के अनुसार, विश्वविद्यालय द्वारा प्रारंभ किए जा रहे इस चीनी भाषा पाठ्यक्रम में अब तक 24 व्यक्तियों ने आवेदन किए हैं, जो बढ़कर 35 हो सकता है। इस पाठ्यक्रम में कुल 20 सीटें हैं और आवेदन करने की अंतिम तिथि 30 जून है। चीनी भाषा पाठ्यक्रम के दो सेमेस्टर होंगे।